UP Board Notes Class 8 Sanskrit Chapter 2
मातृदेवो भव

शब्दार्थाः-ज्वरेण = बुखार से, वैद्यम् = वैद्य को, उक्त्वा = कहकर, तत्र प्राप्तः = वहाँ पहुँचा, क्रीडितुम = खेलने के लिए, क्रीडाक्षेत्रात् = खेल के मैदान से, अनयत् = लाया, उपनिषदुपदिशति = उपनिषद सीख देती है, अन्यद् अपि उक्तम् = और भी कहा गया है, चत्वारि = चार, सत्वरम् = शीघ्र, प्रमुदिता = प्रसन्न।।

मुकुलः एकः ..... अगच्छ त्।
हिन्दी अनुवाद-मुकुल एक छात्र है। उसका एक मित्र है। उसका नाम सतीश है। एक दिन सतीश की माँ बुखार से पीड़ित हो गईं। वह बोली, "अरे सतीश! जाओ वैद्य को बुला लाओ।" सतीश ने कहा, "यह मेरे खेलने का समय है। मेरे मित्र आते हैं। मैं खेलने जाता हूँ।" ऐसा कहकर वह बाहर चला गया।

तस्मिन् एव ..... अगच्छत्।
हिन्दी अनुवाद-उसी समय सतीश का मित्र मुकुल वहाँ आया। उसने सतीश की माँ को बुखार से पीड़ित देखा। उसने उससे पूछा, "सतीश कहाँ गया?" वह बोली, "मित्रों के साथ खेलने गया।" मुकुल दुखी हुआ। वह बाहर गया।

सः सतीशं ..... प्रमुदिताऽभवत्।
हिन्दी अनुवाद-वह सतीश को खेल के मैदान से घर लाया और बोला, "हे मित्र! तुम्हारी माता बुखार से पीड़ित है। तुम्हें उनकी सेवा करनी चाहिए।" क्या तुम नहीं जानते कि उपनिषद में भी यह उपदेश दिया गया है- 'माता देवतुल्य होती है। और यह भी कहा गया है

'अभिवादनशील और नित्य बड़ों की सेवा करने वालों की आयु, विद्या, यश और बल- ये चार बढ़ते हैं।'

"अब जल्दी जाओ और शीघ्र ही चिकित्सक को लाओ।" ऐसा सुनकर सतीश वैद्य को ले आया। उसकी माता प्रसन्न हुई।

https://www.evidyarthi.in/